

नये नियम का इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

सत्र 18: यूहन्ना: चरित्र चित्रण

- नतनियेल, निकोडेमस, सामरी महिला...

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट

द्वारा

ए. समीक्षा [00:00-1:45]

ए: कम्बाइन एबी; 00:00-8:17; नाथनियल (जून 1)

जॉन की पुस्तक पर एक और प्रस्तुति में आपका स्वागत है। हम जॉन के व्यक्तित्व और उनके प्रिय शिष्य होने के बारे में बात कर रहे थे, और उनका यहूदी और फिलिस्तीनी दृष्टिकोण, और समय और स्थानों के संदर्भ में बहुत विस्तृत दृष्टिकोण था। वह फिलिस्तीन की स्थलाकृति से बहुत परिचित थे। फिर पिछली कक्षा में हमने मूल रूप से कुछ प्रमुख विषयों पर चर्चा की, जिनके बारे में हम जॉन में बात कर रहे थे। जॉन का उद्देश्य यह है कि हम "विश्वास करें कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है, और उसके जीवन और उसके नाम पर विश्वास करके," और इसलिए विश्वास एक बड़ी बात है। हमने विश्वास के साथ काम किया और फिर हमने विश्वास को प्रोत्साहित करने के लिए यीशु द्वारा किए गए कुछ संकेत चमत्कारों के साथ भी काम किया। संकेत चमत्कारों में से एक यीशु द्वारा पानी को शराब में बदलना था। इसलिए हमने जॉन 2 में काना में विवाह भोज और यीशु द्वारा पानी को शराब में बदलने के बारे में बात की। हमने शराब के बारे में बात की और शास्त्र के आधार पर और आधुनिक व्यावहारिक आधार पर इसे संभालने के विभिन्न दृष्टिकोण क्या हैं। उसके बाद हमने यीशु को ईश्वर के रूप में बताया और जॉन उन चीजों में से एक है, "शुरुआत में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" *लोगो*[वचन] परमेश्वर था। इसलिए हमने पवित्रशास्त्र के माध्यम से विभिन्न तरीकों से दिखाया कि यीशु मसीह परमेश्वर है। इसे बाद में चर्च द्वारा नहीं जोड़ा गया था, लेकिन यह शुरुआती दस्तावेजों में अंतर्निहित था, सबसे शुरुआती दस्तावेज़ इसलिए चर्च, यीशु मसीह परमेश्वर थे। इसलिए यहोवा के साक्षियों के बारे में, हमने पिछली बार इस बारे में कुछ बात की थी।

बी. यूहन्ना में पात्र: नतनएल (यूहन्ना 1) [1:45-8:17]

अब मैं जो करना चाहता हूँ वह यह है कि हम अब विश्वास के बारे में बात कर रहे हैं और मैं देखना चाहता हूँ कि जॉन कैसे रिकॉर्ड करता है और वह लोगों के प्रति बहुत संवेदनशील है। डॉ. स्टीव हंट, अब, गॉर्डन में, एक किताब लिख रहे हैं और किताब में जॉन के सभी किरदारों पर चर्चा की गई है। जॉन इन विभिन्न किरदारों की बारीकियों को समझने के लिए बहुत संवेदनशील लगता है। इसलिए मैं इनमें से कुछ किरदारों को देखना चाहता हूँ और देखना चाहता हूँ कि ये किरदार अपनी जगह से हटकर किस तरह विश्वास की स्थिति में पहुँचते हैं।

इन चरित्र चित्रणों के संदर्भ में मैं जिस पहले व्यक्ति को देखना चाहूँगा, वह नतनएल होगा। वे उसे नतनएल को संदेहवादी कहते हैं, और इसलिए फिलिप के साथ जो हुआ, वह यूहन्ना 1:45 और उसके बाद है। अब मैं यहाँ कहानी को पूरा पढ़ता हूँ और आप इस अध्याय 1 पद 45 को पहचान लेंगे: "फिलिप ने नतनएल को ढूँढ़कर उससे कहा, 'हमें वह मिल गया है जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्था में लिखा था, और जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने भी लिखा था - यूसुफ का पुत्र नासरत का यीशु।' 'नासरत! क्या वहाँ से कुछ अच्छा निकल सकता है?' नतनएल ने पूछा। 'आओ और देखो,' फिलिप ने कहा। जब यीशु ने नतनएल को आते देखा..." तो यीशु के प्रति नतनएल की पहली प्रतिक्रिया थी, वह नासरत से है। उस शहर से कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता। जब यीशु ने नतनएल को आते देखा, "उसने उसके बारे में कहा, 'यहाँ सचमुच एक इस्राएली है जिसमें कुछ भी झूठ नहीं है।'" तो यीशु ने नतनएल को पकड़ लिया और उसकी दुनिया में घुसकर उसकी चापलूसी की। वह कुछ ऐसा कहता है जो बुरे अर्थ में चापलूसी नहीं करता, बल्कि उसे बताता है, वास्तव में "यहाँ एक सच्चा इस्राएली है जिसमें कुछ भी झूठ नहीं है।" यीशु ने ऐसा कई लोगों के बारे में नहीं कहा। यीशु आमतौर पर कहते थे, "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय।" वह अक्सर लोगों में कमियाँ बताते थे। "पतरस, तू मुझे तीन बार अस्वीकार करेगा," लेकिन नतनएल के साथ वह कहता है, "यहाँ एक सच्चा इस्राएली है जिसमें कुछ भी झूठ नहीं है।" नतनएल ने पूछा, "तुम मुझे कैसे जानते हो?" यीशु ने उत्तर दिया, 'मैंने तुम्हें तब देखा था जब तुम अंजीर के पेड़ के नीचे थे, इससे पहले कि फिलिप ने तुम्हें बुलाया।'"

अब हम नहीं जानते कि इस अंजीर के पेड़ के नीचे क्या चल रहा था, लेकिन जाहिर है कि नतनएल अंजीर के पेड़ के नीचे था और कुछ ऐसा था जिसके बारे में वह सोच रहा था या उसके दिमाग में कुछ चल रहा था, और मूल रूप से यीशु सीधे उस पर पहुँच जाता है: "मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे देखा था इससे पहले कि फिलिप ने तुम्हें बुलाया था।" फिर अचानक यहाँ नतनएल नामक संशयवादी व्यक्ति आ जाता है जो यीशु को नासरत से होने का दिखावा करता है। वह जो करता है, वह यीशु को रूढ़िबद्ध रूप में पेश करता है। वह नासरत से है; मैं नासरत के लोगों से मिला हूँ, वे सभी ऐसे ही हैं। वह यीशु को दर्शाता है, और अब यीशु संशयवादी की दुनिया में घुस जाता है, और कहता है, "मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे देखा था, तुम एक इस्राएली हो जिसमें कोई कपट नहीं है। मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे देखा था इससे पहले कि फिलिप ने तुम्हें बुलाया था।" तब नतनएल ने घोषणा की, 'रब्बी, तुम परमेश्वर के पुत्र हो। तुम इस्राएल के राजा हो।' "क्या आप वहाँ जबरदस्त बदलाव देखते हैं? यीशु संशयवादियों की दुनिया में घुस जाता है, और वह मूल रूप से उसे दो बातें बताता है, जिसका वह अर्थ नहीं निकाल पाता। और वह सोचता है, "वाह, तुम मुझे जानते हो। यह अविश्वसनीय है कि तुम यह जानते थे।" फिर नथानिएल पूरी तरह से "नासरत से कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता" से पलट जाता है। वह पलट जाता है, वह घोषणा करता है, "रब्बी, आप ईश्वर के पुत्र हैं। आप इस्राएल के राजा हैं।" और यीशु ने कहा, "तुम विश्वास करते हो।" जॉन में विश्वास का मुद्दा कैसे है, "तुम विश्वास करते हो क्योंकि मैंने तुमसे कहा था, मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे देखा। तुम उससे भी बड़ी चीजें देखोगे।" फिर उसने कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ।" यह थोड़ा संकेत हो सकता है कि अंजीर के पेड़ के नीचे क्या चल रहा था। "मैं तुमसे सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुलते और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र पर चढ़ते और उतरते देखोगे।" मनुष्य का पुत्र, निश्चित रूप से, यीशु है, जिस तरह से वह खुद को पहचानता है। "मैं तुमसे सच कहता हूँ, तुम स्वर्ग को खुलते और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र पर चढ़ते और उतरते देखोगे।"

हमने इन स्वर्गदूतों को स्वर्ग से ऊपर-नीचे जाते हुए कहाँ देखा है? हमने ऐसा कहाँ देखा है? यीशु उस चीज़ का ज़िक्र कर रहे हैं जिसे हमने पिछले सेमेस्टर में पुराने नियम में देखा था। क्या किसी को याद है कि वह क्या था? हाँ, स्वर्गदूत चढ़ते और उतरते हैं, यह जैकब की सीढ़ी की

कहानी है। जैकब की सीढ़ी की कहानी जहाँ बेथेल में जैकब एक चट्टान पर अपना सिर रखता है और उसे एक सपना आता है जिसमें ये स्वर्गदूत ऊपर-नीचे चढ़ते और उतरते हैं, जैकब की सीढ़ी पर चढ़ते और उतरते हैं। हमने पुराने नियम में कहा था कि यह एक ज़िगगुराट सीढ़ी थी जो सबसे ऊपर जाती थी, जिसके ऊपर भगवान का घर था, और स्वर्गदूत ऊपर-नीचे जा रहे थे। इसलिए यीशु नतनएल की दुनिया में घुसते हैं, उसके चरित्र को पहचानते हैं। नतनएल इस पर थोड़ा हैरान होता है, और फिर यीशु अपनी उंगली ठीक उसी चीज़ पर रखता है जो नतनएल सोच रहा था। नतनएल पूरी तरह से चौंक जाता है। जब संदेह करने वाला आखिरकार आश्वस्त हो जाता है, तो संदेह करने वाला वह व्यक्ति होता है जो दोनों पैरों से कूद पड़ता है। "रब्बी, आप भगवान के बेटे हैं।" वह दोनों पैरों से कूदता है और इसलिए आप देखते हैं कि यीशु इस संशयवादी को संभाल रहा है। संशयवाद के कुछ लाभ क्या हैं और कुछ उपचार क्या हैं? इसके कुछ लाभ हैं। कई बार संशयवादी चीज़ों को एक हाथ की दूरी पर रखते हैं, और इसलिए वे संशयवादी होते हैं क्योंकि वे गैर-प्रतिबद्ध होते हैं, वे गैर-प्रतिबद्ध होते हैं। वे व्यक्तिगत रूप से संलग्न नहीं होते हैं। वे चीज़ों को सुरक्षित रखते हैं। यदि आप संशयवादी हैं, तो आपको वास्तव में किसी चीज़ के लिए खुद को समर्पित करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि यदि आप संशयवादी हैं तो आप सब कुछ बाहर रख सकते हैं और आप सुरक्षित हैं। इसलिए जबकि एक संशयवादी की स्थिति, जबकि इसे हमेशा अत्याधुनिक और संशयवादी के रूप में देखा जाता है, यह वास्तव में एक बहुत ही सुरक्षित स्थिति है क्योंकि एक संशयवादी होने के नाते, आप खेल में कोई भी जोखिम नहीं उठाते हैं। जब आप एक संशयवादी होते हैं, तो सब कुछ सुरक्षित होता है। आप महान आलोचक के रूप में पीछे खड़े होते हैं। आप पीछे हट जाते हैं, अलग हो जाते हैं और इसलिए आप हर किसी की आलोचना कर सकते हैं क्योंकि आप कुछ भी जोखिम में नहीं डाल रहे हैं, आप अपनी गर्दन को बिल्कुल भी जोखिम में नहीं डाल रहे हैं। और इसलिए संशयवादी, लेकिन जब एक संशयवादी अचानक पलट जाता है, तो अचानक अलग होने से, अचानक अब वह व्यस्त हो जाता है और उसे एहसास होता है कि यीशु मसीह है, ईश्वर का पुत्र है। वह पूरी तरह से पलट जाता है और इसलिए यह नथानिएल के साथ एक अच्छी कहानी है। इस तरह से जॉन के अध्याय 1 में नथानिएल को मसीह का पता चलता है और इस तरह से यीशु उसे ये बातें बताकर उस पर विश्वास जगाते हैं।

सी. निकोडेमस: धार्मिक खोजकर्ता (यूहन्ना 3) [8:17-21:08]

बी: संयुक्त सी; 8:17-21:08; निकुदेमुस (यूहन्ना 3)

अब, यहाँ एक और है, निकोडेमस और वह शायद बहुत अधिक प्रसिद्ध है। यह जॉन अध्याय 3 है। मैं बैटसन नामक एक व्यक्ति के बारे में सोचना चाहता हूँ। एक व्यक्ति है जो धर्म के मनोविज्ञान के बारे में ऐसा करता है। यह एक संपूर्ण अध्ययन है, एक संपूर्ण अनुशासन है, धर्म का मनोविज्ञान। मेरा मानना है कि यह बैटसन व्यक्ति प्रिंसटन में है और पारंपरिक रूप से धर्म के मनोविज्ञान में आपको बाहरी धार्मिक लोग मिलते हैं - आपको आंतरिक धार्मिक लोग मिलते हैं। बाहरी धार्मिक लोग वे लोग होते हैं जो बाहरी चीजों से अपने धर्म में अर्थ ढूँढते हैं। तो यह ऐसा होगा जैसे वे कुछ लोगों के समूहों के संदर्भ में अर्थ ढूँढते हैं जो प्रतीकों में अर्थ ढूँढते हैं और बाहरी रूप से प्रतीकों को देखते हैं। कुछ लोग बाइबल पढ़ने या प्रार्थना के संदर्भ में बाहरी रूप से अर्थ ढूँढते हैं। बाहरी चीजें जो आप करते हैं, चर्च सेवाओं में जाना, सप्ताह में एक, दो, तीन बार या चार बार। आप कुछ बाहरी चीजें करते हैं और आप उन बाहरी चीजों में अपने धर्म के लिए अर्थ ढूँढते हैं। और इसलिए उन्हें बाहरी धार्मिक लोग कहा जाएगा। वे उन चीजों में अर्थ खोजते हैं जो बाहर हैं और जिनमें वे भाग लेते हैं। आंतरिक रूप से प्रेरित लोग होते हैं। आंतरिक लोग वे लोग होते हैं जो अपने अंदर बहुत ही निजी तरह की चीजों में अपना धर्म खोजते हैं। तो एक बाह्य और एक आंतरिक होता है, एक आंतरिक व्यक्ति जो ईश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत संबंध और अपने निजी धर्म के संदर्भ में आने वाले अर्थ के संदर्भ में होता है। तो बाह्य और आंतरिक और इसी तरह पारंपरिक रूप से धर्मों के मनोविज्ञान को तोड़ा जाता है। बैटसन एक और श्रेणी लेकर आए, जिसे उन्होंने खोज उन्मुख कहा। बाह्य, आंतरिक और फिर बैटसन ने खोजकर्ता को जोड़ा। खोजकर्ता वह है जो विकसित हो रहा है। इस व्यक्ति के लिए धर्म एक यात्रा है, न कि बाह्य या आंतरिक, बल्कि यह है--एक व्यक्ति की खोज, एक व्यक्ति की यात्रा और वह ऐसा करता है। मैं जो कहना चाहूँगा वह यह है कि मुझे लगता है कि निकोडेमस उन लोगों में से एक है। वह एक खोजकर्ता है। वह सवाल पूछने वाला व्यक्ति है, उसे यकीन नहीं है, वह खोज कर रहा है; वह धर्म की ओर जा रहा है। वह खोज कर रहा है, उम्मीद कर रहा है कि वह पा लेगा और वह इस तरह की चीजें करता है।

तो यूहन्ना 3:1: "और अब फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम का एक आदमी था, जो यहूदी शासक परिषद का सदस्य था।" तो, न केवल वह एक फरीसी था, बल्कि वह यहूदी शासक वर्ग में था। यह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था, यहूदी शासक परिषद। "वह रात में यीशु के पास आया।" अब आपको यूहन्ना में समझना होगा, जब यूहन्ना प्रकाश और अंधकार का उपयोग करता है, तो यूहन्ना इस कल्पना का उपयोग करता है और वह प्रकाश और अंधकार के बीच एक बड़ा अंतर करता है। तो जब नीकुदेमुस रात में आता है, तो आप विशेष रूप से यूहन्ना के लिए एक स्वाद सेट कर रहे हैं। वह कहता है, "रब्बी, हम जानते हैं कि आप एक शिक्षक हैं जो भगवान से आए हैं। क्योंकि कोई भी व्यक्ति आपके द्वारा किए जा रहे चमत्कारों को नहीं कर सकता है यदि परमेश्वर उसके साथ न हो।" अब यह बहुत अविश्वसनीय है। जब आप अधिकांश फरीसियों के बारे में सोचते हैं, तो कई फरीसियों ने यीशु के बारे में क्या कहा? कई फरीसियों के लिए, यीशु ने उनके सामने ही चमत्कार किए। उसने राक्षसों को बाहर निकाला, और उनका निष्कर्ष क्या था? उनका निष्कर्ष था, "उसने दुष्टात्माओं के राजकुमार बालज़ेबूब की सहायता से दुष्टात्माओं को निकाला।" इसलिए, बहुत से फरीसी यीशु के चमत्कारों को अपने चेहरे पर देखते थे और उनके चेहरे पर चमत्कारों के बावजूद, वे निष्कर्ष निकालते थे कि वह शैतान का था। नीकुदेमुस के साथ ऐसा नहीं था, नीकुदेमुस देखता था कि यीशु क्या करता है, और उसने कहा, "रब्बी, हम जानते हैं कि आप एक शिक्षक हैं जो परमेश्वर की ओर से आए हैं, क्योंकि कोई भी व्यक्ति उन चमत्कारी चिह्नों को नहीं दिखा सकता है जो आप करने जा रहे थे यदि परमेश्वर उसके साथ न हो।"

जवाब में यीशु ने घोषणा की। दूसरे शब्दों में, नीकुदेमुस यीशु की बहुत चापलूसी कर रहा था, वह यहाँ बहुत सकारात्मक बातें कह रहा था, और कोई भी ये काम नहीं कर सकता जब तक कि परमेश्वर उनके साथ न हो। तब यीशु बहुत अचानक नीकुदेमुस के पास वापस आ गए, यह आश्चर्यजनक है। जवाब में यीशु ने घोषणा की, "मैं तुमसे सच कहता हूँ। कोई भी परमेश्वर के राज्य को तब तक नहीं देख सकता जब तक कि वह फिर से न जन्मे, ऊपर से न जन्मे।" यह कहाँ से आया? क्या नीकुदेमुस इसके बारे में सवाल पूछ रहा था, नीकुदेमुस बस यीशु से बात कर रहा था और यीशु ने जवाब दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूँ कोई भी राज्य को नहीं देख सकता सिवाय उन लोगों के जो फिर से जन्मे हैं।" नीकुदेमुस फिर सवाल पूछना शुरू करता है। यह उसकी खोज की

तरह की अभिविन्यास को दर्शाता है। जब वह कुछ नहीं समझता है, तो वह एक सवाल पूछने जा रहा है, "मैं इसे नहीं समझता। तुम्हारा क्या मतलब था? एक आदमी जब बूढ़ा हो जाता है तो कैसे जन्म ले सकता है?" नीकुदेमुस ने पूछा। "निश्चित रूप से वह जन्म लेने के लिए अपनी माँ के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश नहीं कर सकता।" नीकुदेमुस बहुत शाब्दिक है। यीशु कह रहे हैं कि आपको फिर से जन्म लेना होगा। वह कहता है कि रुको मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ, क्या मैं अपनी माँ के गर्भ में रेंगने जा रहा हूँ, यह असंभव है। और इसलिए तुम यह कैसे करोगे? तो निकोदेमुस इसे समझ नहीं पाता और फिर वह यीशु से सवाल पूछकर जवाब देता है। यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता जब तक कि वह आत्मा में पानी से पैदा न हो। शरीर शरीर को जन्म देता है। आत्मा आत्मा को जन्म देती है। तुम्हें मेरे कहने पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि तुम्हें फिर से जन्म लेना चाहिए। हवा जहाँ चाहे वहाँ चलती है। और तुम ध्वनि सुनते हो, लेकिन तुम नहीं बता सकते कि यह कहाँ से आती है या कहाँ जा रही है। ऐसा ही हर उस व्यक्ति के साथ होता है जो आत्मा से पैदा होता है।" वैसे यहाँ कुछ नाटक चल रहे हैं। ग्रीक में शब्द *न्यूमा*, आत्मा और हवा एक ही शब्द हो सकते हैं। आत्मा के लिए शब्द का अर्थ साँस भी हो सकता है, इसका अर्थ हवा भी हो सकता है। हिब्रू शब्द के समान, वास्तव में पुराने नियम में *रूआह* के बिल्कुल समान अर्थ क्षेत्र हैं, यह आत्मा हो सकता है, यह हवा हो सकती है, या इसका अर्थ साँस हो सकता है। और इसलिए यीशु के शब्द उसके साथ खेल रहे हैं।

और फिर वह नीचे आता है, "ऐसा ही हर उस व्यक्ति के साथ होता है जो आत्मा से जन्मा है," 'यह कैसे हो सकता है?' नीकुदेमुस ने पूछा।" और फिर यीशु सीधे उसके पास आता है, "तुम इस्राएल के गुरु हो?" यीशु ने कहा। 'और तुम इन बातों को नहीं समझते? मैं तुमसे सच कहता हूँ, हम जो जानते हैं, वही बोलते हैं और जो हमने देखा है, उसकी गवाही देते हैं, लेकिन फिर भी तुम लोग हमारी गवाही स्वीकार नहीं करते। मैंने तुमसे सांसारिक बातें कही हैं और तुम विश्वास नहीं करते। फिर अगर मैं स्वर्गीय बातें कहूँ, तो तुम कैसे विश्वास करोगे? कोई भी स्वर्ग में नहीं गया, सिवाय उसके जो स्वर्ग से आया, अर्थात् मनुष्य का पुत्र। जैसे मूसा ने जंगल में साँप को ऊपर उठाया, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊपर उठाया जाना चाहिए।" तो यहाँ फिर से आप देखते हैं कि यीशु क्या कर रहे हैं? नतनएल के साथ, यीशु ने क्या किया? यीशु नतनएल को वापस याकूब की

सीढ़ी पर ले गए और स्वर्गदूतों को ऊपर चढ़ते और उतरते हुए दिखाया और मैं ईश्वर नहीं हूँ, लेकिन मैं मनुष्य का पुत्र हूँ, और वह उसे उत्पत्ति में याकूब की कहानी पर वापस ले गया। यहाँ, निकोडेमस के साथ, वह उसे वापस संख्या 21 में ले जाता है जहाँ साँप को एक खंभे पर ऊपर उठाया जाता है। उन्होंने साँप को देखा, साँप काट रहे थे और फिर लोग मर रहे थे। उन्होंने साँप को देखा और वे जीवित हो गए। इसलिए यीशु अब उस मार्ग का उपयोग कर रहे हैं। इसलिए, दोनों मामलों में नथानिएल और निकोडेमस के साथ वह उन्हें पुराने नियम में वापस ले जाता है, कल्पना के लिए और उस कल्पना को उनकी वर्तमान स्थिति में प्रतिध्वनित करता है। और इसलिए, "जैसे मूसा ने जंगल में साँप को ऊपर उठाया, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊपर उठाया जाना चाहिए ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र [अपना अद्वितीय पुत्र] दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत की निंदा करने के लिए नहीं, बल्कि उसके द्वारा जगत को बचाने के लिए भेजा है।" इसलिए जो कोई उस पर विश्वास करता है, वह नाश नहीं होगा। "जो कोई भी विश्वास करता है," यह जो कोई भी चाहेगा के महान अंशों में से एक है, यीशु मसीह में विश्वास करने वाला व्यक्ति अनन्त जीवन प्राप्त करता है। यह विश्वास और उस पर विश्वास करने के माध्यम से है कि एक व्यक्ति बचाया जाता है।

और जो कोई भी ऐसा करेगा, जो कोई भी ऐसा करेगा, "जो कोई भी उस पर विश्वास करता है, उसकी निंदा नहीं की जाती है, लेकिन जो कोई भी विश्वास नहीं करता है वह पहले से ही दोषी है क्योंकि वह ईश्वर के एकमात्र पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं करता है। और यह फैसला है, प्रकाश दुनिया में आ गया है, लेकिन लोग अंधकार से प्यार करते हैं।" क्या आपको यहाँ कल्पना समझ में आई? नीकुदेमुस रात में आता है, "प्रकाश दुनिया में आ गया है, लेकिन लोग प्रकाश के बजाय अंधकार से प्यार करते हैं क्योंकि उनके कर्म बुरे थे। हर कोई जो बुरा करता है वह प्रकाश से घृणा करता है और इस डर से प्रकाश में नहीं आता है कि उसके कामों का पर्दाफाश हो जाएगा, लेकिन जो कोई भी सत्य से जीता है वह प्रकाश में आता है ताकि यह स्पष्ट रूप से देखा जा सके, कि उसने जो किया, जो उसने किया है, वह ईश्वर के माध्यम से किया गया है।" इस तरह के प्रकाश और अंधेरे की बात को देखें, और यीशु ने कहा, लोग रात में आ रहे हैं, और मुझे लगता है कि नीकुदेमुस के

लिए यहाँ निहितार्थ हैं।

फिर क्या होता है, यह कहता है, "लेकिन जो कोई सत्य से जीता है वह ज्योति के निकट आता है ताकि यह स्पष्ट रूप से देखा जा सके कि उसने जो कुछ किया है वह परमेश्वर के द्वारा किया गया है।" फिर अगले श्लोक में नीकुदेमुस की प्रतिक्रिया का क्या होता है, क्या नीकुदेमुस ने यीशु पर विश्वास किया या उसने यीशु पर विश्वास नहीं किया? आपको यह महान कथन मिलता है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" यह यूहन्ना 3:16 का कथन है। क्या नीकुदेमुस ने तब विश्वास किया? क्या वह "जो कोई चाहेगा" व्यक्ति था? अध्याय 3 श्लोक 22, श्लोक में केवल विषय बदल दिया गया है। इसके बाद यीशु और उसके शिष्य यहूदिया के ग्रामीण इलाकों में चले गए जहाँ उन्होंने उनके साथ कुछ समय बिताया और बपतिस्मा दिया। तो नीकुदेमुस के साथ आखिर क्या हुआ ? क्या नीकुदेमुस ने विश्वास किया या नहीं किया? यूहन्ना 3 में, ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं था कि नीकुदेमुस ने विश्वास किया। यह बस उसे छोड़ देता है। वह अंत में है, यीशु नीकुदेमुस को जो कोई चाहेगा के बारे में एक संदेश देता है। भगवान दुनिया को दोषी ठहराने के लिए दुनिया में नहीं आए, बल्कि इसलिए आए कि दुनिया उनके द्वारा बचाई जाए - नीकुदेमुस में प्रकाश और अंधकार। और फिर आप नीकुदेमुस से नाथनियल की तरह किसी तरह की प्रतिक्रिया की उम्मीद करते हैं, जहाँ आपको जवाब मिलता है। "तुम ईश्वर के पुत्र हो या नाथनियल की तरह कुछ ऐसा कहना एक बहुत ही मजबूत बयान है। नीकुदेमुस के साथ कोई प्रतिक्रिया नहीं थी। जीसस समाप्त हो जाते हैं और फिर पैराग्राफ विभाजन होता है और जीसस जॉर्डन नदी के किनारे लोगों को बपतिस्मा दे रहे हैं, या उनके शिष्य हैं। इसलिए नीकुदेमुस को हटा दिया जाता है। यह वास्तव में दिलचस्प है, यहाँ यहूदियों का यह नेता है, और खोजकर्ता के लिए, प्रतिक्रिया कहाँ है?

मुझे लगता है कि अध्याय 3 और अध्याय 4 के बीच कुछ चल रहा है और मैं उन दोनों को पाठ्य रूप से जोड़ने की कोशिश करने जा रहा हूँ। और हम देखेंगे कि पाठ अध्याय 3 और अध्याय 4 के बीच कैसे आगे-पीछे होता है। मुझे लगता है कि इसमें से कुछ इसमें भूमिका निभाता है। लेकिन, मुझे आश्चर्य है कि क्या इसका एक हिस्सा यह है कि निकुदेमुस एक खोजकर्ता है। वह एक खोजकर्ता है। इसलिए निकुदेमुस मौके पर कोई निर्णय नहीं लेता है। अलग-अलग लोग, मैं इस सब

के साथ जो सुझाव देने की कोशिश करने जा रहा हूँ वह यह है कि यीशु अलग-अलग लोगों पर प्रहार करता है और विश्वास को प्रेरित करने के लिए अलग-अलग तरीकों से उनसे संपर्क करता है। खोजकर्ता के साथ आपको व्यक्ति को जगह देनी होगी। वह सवाल पूछ रहा है, उसे इस पर विचार करने की ज़रूरत है, वह दोनों पैरों से कूदने वाला नहीं है। एक संशयवादी, एक संशयवादी, संशयवादी, संशयवादी, यीशु उसकी दुनिया में घुस जाता है, फिर वह पूरी तरह से कूद जाता है। उसके दोनों पैर अंदर हैं या दोनों पैर बाहर हैं। खोजकर्ता के साथ नहीं। केस्टर वह व्यक्ति है जो अपने भोजन के साथ खेलता है, और वह प्रश्न पूछता है और विश्लेषण करता है और वह इसके बारे में सोचता है और इस पर विचार करता है। वह मौके पर निर्णय लेने के लिए तैयार नहीं है। और यहाँ और अभी कोई निर्णय नहीं लिया गया है। हम जानते हैं कि यदि आप अध्याय पर जाते हैं, तो मुझे विश्वास है कि यह अध्याय 19 श्लोक 39 में है। यीशु के मरने के बाद कौन प्रकट होता है? उसके शरीर की देखभाल करने के लिए कौन प्रकट होता है? यह निकोडेमस और अरिमथिया का यूसुफ है। जाहिर है निकोडेमस, जो प्रमुख यहूदी परिषद के सदस्य थे और मुझे भी आश्चर्य है कि क्या यहूदी महासभा में जो कुछ हुआ, उसके बारे में हम जो कुछ जानते हैं, वह वास्तव में निकोडेमस के माध्यम से आया था जो उस परिषद में था। और इसलिए हमारे पास यहाँ निकोडेमस के माध्यम से एक अंदरूनी कहानी हो सकती है, लेकिन निकोडेमस और अरिमथिया का यूसुफ, वह अमीर आदमी जिसने यीशु को दफनाने के लिए अपनी कब्र दी थी। निकोडेमस और अरिमथिया का यूसुफ यीशु को दफनाने के लिए जॉन की पुस्तक के अंत में अध्याय 19 में दिखाई देते हैं। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि अध्याय 3 में कोई प्रतिक्रिया नहीं है। हमें अध्याय 19 की आयत 39 तक इंतजार करना होगा ताकि पता चल सके कि निकुदेमुस के साथ क्या हुआ। तो, अलग-अलग लोग, अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ, दोनों मामलों में यीशु उन्हें पुराने नियम में वापस ले जाता है, चाहे वह नतनएल के लिए याकूब की सीढ़ी हो, या फिर एक खंभे पर साँप को चढ़ाना, विश्वास करना और चंगा होना और जीवित रहना, मूसा के साथ वापस। और इसलिए, दोनों बार, यीशु उन्हें वापस ले जाता है।

डी. कुँ पर सामरी स्त्री (यूहन्ना 4) [21:08-32:50]

सी: DE; 21:08-35:23; कुँ पर स्त्री (यूहन्ना 4)

खैर अब इस तीसरे के बारे में क्या: सामरिया की महिला। वह पूरी तरह से विपरीत है; सबसे पहले वह सामरिया की महिला है। तो आपके पास निकोडेमस है, निकोडेमस उच्च शासक वर्ग से है, वह एक फरीसी है और वह यहूदी परिषद में है। यहाँ आपके पास एक महिला है जो सामरिया से है, वह सिर्फ एक सामान्य महिला नहीं है; वह एक सामरी महिला है। तो वह सबसे नीची है, हमने पहले कहा है कि यहूदियों और सामरियों के बीच तनाव है। वह एक बाहरी व्यक्ति है, जबकि निकोडेमस एक अंदरूनी व्यक्ति है। वह यहूदी है, वह बहुत यहूदी है और यहूदियों का नेता है। यहाँ अब आपके पास सामरिया की इस महिला के साथ एक पूरी तरह से बाहरी व्यक्ति है। यह देखना दिलचस्प है कि यीशु उसके साथ कैसे नृत्य करते हैं। निकोडेमस के साथ, निकोडेमस आता है, यीशु निश्चित रूप से ईश्वर के महान शिक्षक और ये सभी अच्छी बातें हैं। यीशु कहते हैं, "तुम्हें फिर से जन्म लेना होगा।" यीशु निकुदेमुस के साथ बहुत ही अचानक और सीधे उसके सामने ही बात करते हैं। और फिर, "क्या तुम इन सब बातों को नहीं समझते?" निकुदेमुस की एक समस्या क्या है? वह इसराइल में एक महान शिक्षक है और वह यीशु के पास आता है और यीशु कहते हैं कि तुम इन बातों को नहीं समझते। इसलिए निकुदेमुस को कहना पड़ता है, "नहीं, मैं नहीं समझता।" एक नेता के लिए जो कहना वाकई मुश्किल है, वह है, "मुझे नहीं पता।" इसलिए यीशु उसे यह कहने के लिए मजबूर करते हैं। फिर यीशु कहते हैं, "तुम जानते हो कि तुम इतने बड़े अधिकारी हो, और तुम्हें इनमें से कुछ बुनियादी बातें भी नहीं पता।" मुझे लगता है कि जो होता है, वह यह है कि तुम्हें विनम्र होना पड़ता है। इसलिए निकुदेमुस को अपने घमंड से उतरना पड़ता है और यह समझना पड़ता है, "मैं इन बातों को नहीं जानता जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो।" मुझे पता है कि जब मैंने पहली बार पढ़ाना शुरू किया था, तो मैं वास्तव में बहुत डरा हुआ था। मुझे डर लगता था कि कोई छात्र मुझसे ऐसा सवाल पूछेगा जिसका जवाब मुझे नहीं पता होगा। और अब, जैसा कि मैंने वर्षों से पढ़ाया है, अब जब छात्र मुझसे सवाल पूछते हैं, तो मैं आमतौर पर मौके पर ही जवाब बना लेता हूँ। मैं अपने पैरों पर तेज़ हूँ और चीजों को ज़्यादा समझता हूँ इसलिए मैं चीज़ें बना सकता हूँ। लेकिन ध्यान दें, मैंने कहा, "मैं चीज़ें बनाता हूँ," और अगर मैं अपने छात्रों के साथ वास्तव में ईमानदार हूँ, और मैं ऐसा करने की कोशिश करता हूँ, तो मैं कई बार कहता हूँ, मेरे मुँह से पहली बात यह निकलती है कि "मुझे उस सवाल का जवाब नहीं पता," अगर उन्होंने वाकई अच्छा और

कठिन सवाल पूछा है। मुझे नहीं पता, लेकिन फिर मैं उन्हें बताता हूँ, मैं कुछ बना लूँगा क्योंकि, मैं रचनात्मक हूँ और चीज़ों के बारे में बहुत सोचता हूँ, लेकिन वैसे भी, "मुझे नहीं पता" कहना एक नेता और एक शिक्षक के लिए वास्तव में एक महत्वपूर्ण बात है कि वह कह सके और उसे वैसे ही रहने दे।

लेकिन अब सामरिया की इस महिला के बारे में क्या? मुझे यहाँ कहानी पढ़कर सुनाने दीजिए। अब, "उसे सामरिया जाना था, इसलिए वह सामरिया के एक शहर में आया, जिसका नाम सूखार था। अब यह वह जगह है जहाँ याकूब का कुआँ है, याकूब फिलिस्तीन की भूमि में गया और वहाँ एक कुआँ था। याकूब ने अपने बेटे जोसेफ को जो ज़मीन दी थी, उसके पास ही याकूब का कुआँ था। याकूब का कुआँ वहाँ था और यीशु, यात्रा से थके होने के कारण, कुएँ के पास बैठ गए। यह लगभग छठे घंटे का समय था।" याद रखें कि मैंने आपको कैसे बताया कि यूहन्ना इन विवरणों को खींचता है। "यह लगभग छठे घंटे का समय था," इसलिए अब दोपहर के लगभग समय है और इसलिए यह दोपहर में ही है। वैसे वे अपना दिन सुबह 6 बजे शुरू करते हैं जब सूरज उगता है। उनका दिन सूरज उगने के साथ शुरू होता है। तो यह 6 बजे से दोपहर तक, छठे घंटे का समय होगा। जब सामरी महिला पानी भरने आई तो यीशु ने उससे कहा, "क्या तुम मुझे पानी पिलाओगी?" इसलिए, यीशु ने उससे कोई दार्शनिक प्रश्न या कुछ भी नहीं पूछा, उसने बस उससे पानी पीने के लिए कहा। वह प्यासा है; वह थका हुआ है; "क्या मुझे पानी मिल सकता है?" उसके शिष्य भोजन खरीदने के लिए शहर में गए थे। इसलिए कोई शिष्य नहीं हैं, शिष्य शहर गए थे। यीशु सामरी महिला के साथ अकेले हैं।

सामरी स्त्री ने उससे कहा, अब यीशु ने बस यही प्रश्न पूछा, "क्या मैं पानी पी सकता हूँ?" और स्त्री - अब, नीकुदेमुस के मामले में, यीशु नीकुदेमुस के साथ बहुत ही अचानक से बात करते हैं। अब यहाँ वह स्त्री है जो यीशु के साथ अचानक से बात करती है। तो सामरी स्त्री ने उससे कहा, "तुम एक यहूदी हो और मैं एक सामरी स्त्री हूँ। तुम मुझसे पानी कैसे माँग सकते हो?" (यहूदी सामरियों के साथ संगति नहीं करते)।" बाइबिल में छोटा नोट, "(यहूदी सामरियों के साथ संगति नहीं करते)।" "तो तुम मुझसे पानी कैसे माँग सकते हो जब तुम एक यहूदी हो और मैं अशुद्ध हूँ? मैं एक सामरी स्त्री हूँ।" तो वह यीशु के सामने बहुत अचानक से बात करती है, यीशु ने उसे उत्तर दिया,

"यदि तुम परमेश्वर के उपहार को जानती और यह कौन है, वह कौन है जो तुमसे पानी माँगता है, तो तुम उससे माँगती और वह तुम्हें जीवन का जल देता।"

अब यह वाक्यांश "जीवित जल", यदि आप यहूदी हैं, और यीशु स्पष्ट रूप से अरामी बोल रहे थे, तो यह *मायम हैम होगा*, और आप सभी जानते हैं कि यहूदी लोग जब टोस्ट करना चाहते हैं, तो वे *ल हैम कहते हैं*। *ल हैम* का अर्थ है "जीवन के लिए।" तो, *मायम हैम* जीवित जल है। यीशु *मायम हैम* जीवित जल के बारे में बात कर रहे हैं। आज जब आप "जीवित जल" कहते हैं, तो इसका अर्थ है "बहता पानी।" अब वह पानी लेने के लिए एक कुएं पर जा रही है, यीशु कह रहे हैं, "मैं तुम्हें जीवन का जल दे सकता हूँ।" "'श्रीमान,' महिला ने कहा, 'आपके पास पानी भरने के लिए कुछ भी नहीं है और कुआं गहरा है। आप यह जीवन का जल कहां से ला सकते हैं? क्या आप महान हैं।' - अब इसे देखें, उसे यहां संकेत मिल रहे हैं। "क्या आप हमारे पिता याकूब से महान हैं? जिसने हमें कुआं दिया और खुद उसमें से पिया, जैसा कि उसके बेटों ने किया," याकूब के बेटे, जो इस्राएल के बारह गोत्र हैं, "और उसके बेटों और उसके झुंड और उसके पशुओं ने भी।" यीशु ने उत्तर दिया, "जो कोई इस जल को पीएगा, वह फिर प्यासा होगा, परन्तु जो कोई उस जल को पीएगा जो मैं दूंगा, वह फिर कभी प्यासा न होगा। वरन् जो जल मैं उसे दूंगा, वह उसके भीतर एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।" क्या आप देखते हैं कि यहून्ना अनन्त जीवन के विषय पर कैसे बात करता रहता है? "स्त्री ने उससे कहा, 'हे प्रभु, मुझे यह जल दे ताकि मुझे प्यास न लगे और मैं जल भरने के लिये आती रहूँ। मैं यहाँ जल भरने के लिये आती हूँ।'" स्त्री ने कहा, "यह बहुत बढ़िया है। मैं यहाँ हर समय पानी ढोते हुए नहीं रहना चाहती। यह आदमी मुझे पानी दे सकता है; मैं फिर कभी प्यासी नहीं रहूँगी। यह अब तक की सबसे अच्छी बात होगी।" यह यीशु का उत्तर था, वह पूछ रही थी, इसलिए उसने उसे बहकाया। "'मुझे इस जल में से कुछ दे दो ताकि मुझे यहाँ फिर से न आना पड़े,' और फिर यीशु ने कहा, 'क्या तुम उस जल में से कुछ चाहती हो?'" यहाँ उसका अगला प्रश्न है, उसने उससे कहा, "जाओ अपने पति को बुलाओ और वापस आओ।" यीशु अब इस स्त्री के जीवन में प्रवेश कर रहे हैं। उसने उसे फंसा लिया, वह इस पानी में रुचि रखती है और यीशु ने कहा, "'जाओ अपने पति को बुलाओ।' 'मेरा कोई पति नहीं है,' उसने उत्तर दिया। यीशु ने कहा, 'तुम सही कहती हो कि तुम्हारा कोई पति नहीं है। सच तो यह है कि तुम्हारे पाँच पति रह चुके हैं और जिस

आदमी के साथ तुम अब संबंध बना रही हो - मेरा मतलब है, जिस आदमी के साथ तुम अब रह रही हो वह तुम्हारा पति नहीं है। तुमने जो कहा है वह बिल्कुल सच है।' 'श्रीमान,' महिला ने कहा, 'मैं देख सकती हूँ कि आप एक पैगम्बर हैं।' इस आदमी को कैसे पता कि मेरे पाँच पति रह चुके हैं और जिस आदमी के साथ मैं अब रह रही हूँ वह मेरा पति नहीं है? तुम ज़रूर एक पैगम्बर हो।

"हमारे पूर्वज," और फिर वह उसे रोकने के लिए फिर से एक धार्मिक प्रश्न पूछती है, "हमारे पूर्वज इस पहाड़ पर पूजा करते थे, लेकिन तुम यहूदी दावा करते हो कि जिस स्थान पर हमें पूजा करनी चाहिए वह यरूशलेम में है।" तब यीशु ने घोषणा की, 'मेरी बात पर विश्वास करो, एक समय आ रहा है जब तुम पिता की पूजा न तो इस पहाड़ पर करोगे और न ही यरूशलेम में।' यह एक तरह का भविष्यसूचक कथन है। "तुम सामरी लोग जिसकी पूजा नहीं करते हो, उसकी पूजा करते हो। हम जिसकी पूजा करते हैं, उसे जानते हैं क्योंकि उद्धार यहूदियों से है।" यीशु अपने यहूदी होने से पीछे नहीं हटते। "फिर भी, एक समय आ रहा है," और यह सुंदर है, "फिर भी एक समय आ रहा है और अब आ गया है जब सच्चे उपासक आत्मा और सच्चाई में पिता की पूजा करेंगे, क्योंकि वे ऐसे उपासक हैं जिन्हें पिता चाहते हैं। ईश्वर एक आत्मा है, अनंत, शाश्वत, अपरिवर्तनीय," ओह, यह वेस्टमिंस्टर स्वीकारोक्ति है। "ईश्वर एक आत्मा है और उसके उपासकों को आत्मा और सच्चाई में पूजा करनी चाहिए।" तब स्त्री कहती है, 'मैं जानती हूँ कि मसीहा जिसे ख्रिस्त कहा जाता है, [मसीहा हिब्रू शब्द है, *क्राइस्ट* ग्रीक शब्द है] आ रहा है और जब वह आएगा तो वह हमें सबकुछ समझाएगा।' अब, मैं चाहता हूँ कि आप यीशु के बारे में सोचें। लोग, जब यीशु ने पूछा, आप जानते हैं, "यीशु आप कौन हैं?" यीशु हमेशा उन्हें यह उत्तर देते हैं जो बिल्कुल सीधा नहीं होता है और कहते हैं, "लोग मुझे कौन कहते हैं? आप जानते हैं और वह इस तरह से चले जाते हैं। यह बहुत दिलचस्प है कि वह इस महिला को कैसे जवाब देते हैं। "मैं जानता हूँ कि मसीहा जिसे ख्रिस्त कहा जाता है, आ रहा है, जब वह आएगा तो वह सबकुछ समझाएगा।" और फिर यीशु ने घोषणा की, [और मैं चाहता हूँ कि आप पूरे शास्त्र में एक स्पष्ट कथन खोजें, उसके बारे में सोचें।] यीशु कहते हैं, "मैं जो तुमसे बोल रहा हूँ वही हूँ यह सबसे स्पष्ट घोषणाओं में से एक है कि यीशु मसीहा हैं, पवित्र शास्त्र में कहीं भी मसीहा हैं, जैसा कि इस सामरी महिला के प्रश्न का उत्तर है। दूसरे शब्दों में, वह निकोडेमस के लिए ऐसा नहीं करता है जो एक खोजी है, और इसलिए निकोडेमस सवाल पूछ रहा

है और चीजों पर विचार कर रहा है। सामरी महिला आती है और कहती है, हम मसीह के बारे में जानते हैं और यीशु उसे सोचने और विचार करने के लिए नहीं कहते हैं। वह तुरंत कहता है, "मैं वह हूँ जो तुमसे बात कर रहा है, हाँ, हाँ मैं वही हूँ। मैं मसीहा हूँ; मैं मसीह हूँ," एक स्पष्ट कथन। कैफा को याद करें, "तुम कौन हो?" और यीशु, चुपचाप पीटा गया, उसे ठीक से नहीं बताता और फिर खुद को स्वर्ग से आने वाले मनुष्य के पुत्र के रूप में वर्णित करता है। लेकिन यहाँ, सामरी महिला से वह कहता है, "मैं मसीहा, मसीह हूँ।" यहाँ एक अविश्वसनीय कथन है।

फिर सामरी स्त्री, क्या हुआ? शिष्य वापस आए और तभी शिष्य वापस लौटे और उसे स्त्री से बात करते हुए देखकर आश्चर्यचकित हुए। लेकिन कोई नहीं पूछता कि तुम क्या चाहते हो, या तुम उससे क्यों बात कर रहे हो। फिर, अपना पानी का घड़ा छोड़कर, स्त्री वापस शहर में गई और लोगों से कहा, "आओ एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बताया जो मैंने किया।" इस स्त्री का क्या कथन है। शहर के लोग, छोटे शहर के सभी लोग उसे जानते होंगे। यह आदमी बाहर आता है, इस आदमी ने मुझे सब कुछ बताया है। क्या यह मसीह हो सकता है? वे शहर में आए और वे उसकी ओर बढ़े। इस बीच, सामरी वापस पद 39 में आए। "और उस शहर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री की गवाही के कारण उस पर विश्वास किया।" यह स्त्री, यह एक अद्भुत कहानी है। वह पहली मिशनरियों में से एक बन जाती है। वह वापस जाती है और वह भेजी गई है। वह सामरियों के लिए एक प्रेरित है और वह सामरियों के लिए गवाही देती है। शिष्य भोजन खरीदने के लिए शहर में जाते हैं। वे भोजन लेकर वापस आते हैं; यह महिला शहर में जाती है। वह सुसमाचार को शहर में ले जाती है और कहती है, "महिला की गवाही के कारण शहर के कई सामरी उस पर विश्वास करते थे। 'उसने मुझे सब कुछ बताया जो मैंने किया।' इसलिए जब सामरी उसके पास आए, तो उन्होंने उससे आग्रह किया कि वह उनके साथ रहे। और वह दो दिन तक रहा और उसके शब्दों के कारण, कई और लोग विश्वासी बन गए।" फिर से, यूहन्ना का जोर विश्वासियों और विश्वास करने पर है। और इसलिए यहाँ आपके पास यह सामरी महिला है जो सामरियों को खोलती है। वैसे, जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में जाते हैं तो यह बहुत दिलचस्प है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में सामरी ईसाई के रूप में दिखाई देते हैं, संभवतः यहाँ की स्थिति से बाहर आकर।

ई. निकुदेमुस और सामरी स्त्री की कहानियों की तुलना [32:50-35:23]

इसलिए मैं निकुदेमुस और सामरिया की इस महिला के बीच थोड़ी तुलना करना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि अध्याय 3 और अध्याय 4 में उनके बीच ये अंतर-पाठीय संबंध आगे-पीछे होते रहते हैं। और इसलिए आप उदाहरण के लिए पाते हैं, निकुदेमुस उच्च स्थिति का व्यक्ति है। महिला निम्न स्थिति की व्यक्ति है। निकुदेमुस यीशु से बहुत विनम्र है, "ओह, आप इस्राएल के शिक्षक हैं" और इस तरह से चले जाते हैं। यीशु अचानक वापस आते हैं और बहुत ही अचानक। वे कहते हैं, "अरे, फिर से जन्म लो।" निकुदेमुस कहते हैं, "यह दुनिया में कहाँ से आया?" मैं ऐसा कैसे करूँ? यीशु अचानक वापस आते हैं और कुछ अर्थों में अलग-थलग हो जाते हैं। यीशु सामरी महिला से, यीशु सामरी महिला से बहुत विनम्र हैं, "क्या मैं पानी पी सकता हूँ?" लेकिन महिला बहुत अचानक है। "आप कैसे, हाँ, आप वहाँ से एक यहूदी हैं, आप मुझसे, एक सामरी महिला से, पानी के लिए कैसे पूछ सकते हैं?" तो महिला बहुत अचानक वापस आ जाती है। निकुदेमुस ने सवाल, सवाल और सवाल पूछे। वह एक खोजी है और इसलिए वह सवाल पूछता है। दूसरी ओर, यीशु ने महिला से सवाल पूछे। "क्या तुम अपने पति को लेने जाओगी?... ओह, तुम्हारे पास पाँच थे।" इसलिए यीशु ने महिला से सवाल पूछे, जबकि निकुदेमुस ने सवाल पूछे।

निकोडेमस में, कहानी निकोडेमस के अनिर्णीत होने के साथ समाप्त होती है और कहानी अचानक समाप्त हो जाती है। आपको अंत में निकोडेमस की ओर से कोई प्रतिक्रिया भी नहीं सुनाई देती। यीशु बस यह कहते हैं, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" फिर कहानी समाप्त हो जाती है। निकोडेमस, आप नहीं जानते कि उसके साथ क्या हुआ। निकोडेमस के बारे में जानने के लिए आपको अध्याय 19 तक प्रतीक्षा करनी होगी। वह एक खोजी है। महिला, न केवल यीशु के बारे में बयान देती है, "आप मसीह हैं," यीशु कहते हैं, "मैं वही हूँ। मैं मसीह और मसीहा हूँ।" महिला यीशु के लिए एक गवाह बन जाती है। वह सामरिया के इस शहर और वहाँ के सूखार शहर में जाती है। वह यीशु के लिए एक गवाह बन जाती है। और इसलिए यह दिलचस्प है। निकोडेमस, पुस्तक के अंत में हम पाते हैं कि वह और अरिमथिया का यूसुफ मसीह का शरीर लेते हैं और वह यीशु के लिए

खड़ा होता है। लेकिन प्रेरितों के काम की पुस्तक में सामरी लोग संभवतः इस सामरी महिला द्वारा बोए गए आरंभिक बीजों पर प्रतिक्रिया करते हैं, जिससे यीशु ने बात की थी। इसलिए मुझे लगता है कि अध्याय 3, निकोडेमस की कहानी और सामरी महिला की कहानी के बीच यह अंतर्क्रिया है। उन दोनों के बीच एक नाटक चल रहा है और एक तरह का अंतर-पाठीय नाटक है।

एफ. चरित्र चित्रण: व्यभिचारी स्त्री [35:23-41:34]

डी: संयुक्त एफ; 35:23-41:34; व्यभिचारिणी स्त्री (यूहन्ना 8)

अब, मैं कुछ अन्य पात्रों पर जल्दी से बात करना चाहता हूँ, और फिर मैं थॉमस पर अधिक पूर्ण तरीके से ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ। व्यभिचारी महिला की कहानी या पेरिकोप , और मुझे यहाँ चीजों को गति देने के लिए अपने दिमाग से यह एक कहानी निकालनी है। यह अध्याय 7:53 से 8:11 तक है, इसलिए यह मूल रूप से अध्याय 8 का प्रारंभिक भाग है। यह पेरिकोप है, यह कहानी, व्यभिचार में पकड़ी गई महिला के बारे में है। आपको याद होगा कि फरीसी इस महिला को लाते हैं जो व्यभिचार में पकड़ी गई है। वे उसे यीशु और मूसा के पास लाते हैं, यह दावा करते हुए कि कानून में कहा गया है कि यह महिला व्यभिचार में पकड़ी गई है, उसे पत्थर मारना चाहिए। आप क्या कहते हैं यीशु? वे उसे फँसाने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि अगर यीशु कहते हैं कि उसे पत्थर मारो और मार डालो; तो वह रोमनों के खिलाफ जा रहा है क्योंकि रोमनों ने यहूदियों द्वारा किसी की हत्या की अनुमति नहीं दी थी। उन्हें रोमनों की स्वीकृति से इसे प्राप्त करना था, इसलिए अगर वह कहता है कि उसे पत्थर मारना चाहिए, तो वह रोम के खिलाफ जा रहा है। अगर वह कहता है कि उसे पत्थर नहीं मारना चाहिए, तो वह यहूदी परंपरा के खिलाफ जा रहा है क्योंकि वे मूसा का हवाला दे रहे हैं जिसने कहा था कि उसे पत्थर मारना चाहिए। तो किसी भी तरह से वे उसे पकड़ लेंगे।

तो यीशु क्या करते हैं? "जो पूर्ण है, वही पहला पत्थर मारे।" फिर यीशु जमीन पर कुछ लिखते हैं और हर किसी ने कल्पना की है कि यीशु ने जमीन पर क्या लिखा है, कुछ लोगों का सुझाव है कि यीशु ने उन महिलाओं को लिखा है जिनके साथ ये लोग रहते थे और सभी तरह की चीजें जो लोग कहते हैं कि यीशु ने जमीन पर लिखी हैं। लेकिन, कहने की जरूरत नहीं है, यीशु ने

कहा, "जो पूर्ण है, वही पहला पत्थर मारे।" फिर वह दिलचस्प पाठ कहता है, "वे सभी चले जाते हैं, बड़े से छोटे की ओर। वे सभी चले जाते हैं, बड़े से छोटे की ओर।" एक बूढ़े आदमी और जवान आदमी के बीच क्या अंतर है? बूढ़ा आदमी जीवन और ज्ञान और उस तरह की चीजों की जटिलताओं से अवगत है। युवा पुरुष शायद पत्थर उठाते हैं और उसे पत्थर मारने के लिए तैयार थे, वास्तव में गुस्से में थे। तो वह एक व्यभिचारी है उसे मर जाना चाहिए। और वह उग्र जुनून में है और यह उग्र जुनून सच्चाई की रक्षा करने के लिए जाता है। एक बूढ़ा व्यक्ति महसूस करता है, "अरे, वहाँ लेकिन भगवान की कृपा के लिए मैं जाता हूँ।" तो बूढ़े लोग चले जाते हैं।

अंत में, यीशु के पास केवल वह स्त्री रह गई। और जब स्त्री ने ऊपर देखा तो मुझे वास्तव में इसे पढ़ने दीजिए क्योंकि मुझे लगता है कि यह बहुत रोचक है, यीशु और स्त्री के बीच की बातचीत। यह अध्याय 8 में है, और मुझे बस यहाँ नीचे जाना है। उसने सीधा होकर उनसे कहा, "यदि तुम में से कोई पाप रहित है, तो वह पहला पत्थर फेंके।" वह नीचे झुका और जमीन पर लिखा। हमें नहीं पता कि वह क्या था। "यह सुनकर जो लोग यह सुन रहे थे, वे एक-एक करके चले गए, पहले बुजुर्ग, जब तक कि यीशु के पास केवल वह स्त्री रह गई, जो अभी भी वहीं खड़ी थी और यीशु ने सीधा होकर उससे पूछा, 'स्त्री, वे कहाँ हैं? क्या किसी ने तुम्हें दोषी नहीं ठहराया?' 'किसी ने नहीं, श्रीमान,' उसने कहा।" और यीशु ने यह टिप्पणी की और यह एक ऐसी टिप्पणी है जो मुझे लगता है कि वास्तव में कठिन है। "न ही मैं तुम्हें दोषी ठहराता हूँ।" "क्या किसी ने तुम्हें दोषी नहीं ठहराया?" 'कोई नहीं सर,' उसने कहा। 'मैं भी तुम्हें दोषी नहीं ठहराता,' यीशु ने घोषणा की, 'अब जाओ। अपने पाप के जीवन को छोड़ दो।' कुछ लोगों ने कहा है कि यह अंश मूल रूप से अध्याय 7:53 से 8:11 तक और अध्याय 8 की शुरुआत में व्यभिचारी महिला का पेरिकोप है। यदि आप अपने NIV बाइबिल में देखें तो आप इस पेरिकोप को पार करते हुए सीधी रेखाएँ देखेंगे। यह हमारी कुछ बेहतरीन और शुरुआती पांडुलिपियों में नहीं पाया जाता है। इस मामले का तथ्य यह है कि यह कहानी लूका की कुछ पांडुलिपियों में पाई जाती है। और लूका में, यह लूका 21 में यही कहानी थी। तो यह एक तरह से एक अस्थायी पेरिकोप या एक अस्थायी कहानी है जो लूका तक तैरती हुई प्रतीत होती है और फिर यहाँ यूहन्ना में समाप्त होती है। इसलिए, अधिकांश लोग स्वीकार करते हैं कि यह कहानी अंततः एक वैध कहानी है।

लेकिन इसके बारे में सोचिए, आप एक भिक्षु हैं। मान लीजिए कि आप मध्य युग में एक भिक्षु हैं और आप बाइबल की नकल कर रहे हैं। आपने ब्रह्मचर्य और गरीबी की शपथ ली है और इसलिए आपने ब्रह्मचर्य की शपथ ली है और अचानक आप इस व्यभिचारी महिला के बारे में लिख रहे हैं। यीशु व्यभिचार में पकड़ी गई महिला की ओर मुड़ते हैं और कहते हैं, "मैं भी तुम्हें दोषी नहीं ठहराता।" आप कहते हैं कि एक मिनट रुकिए, मैंने ब्रह्मचर्य की शपथ ली है और इसलिए अचानक यह हो जाता है कि यीशु इस व्यभिचारी महिला से कैसे कह सकते हैं कि वे उसकी निंदा नहीं करते? मेरा मतलब है कि वह एक व्यभिचारी महिला है। मुझे लगता है कि मैं भिक्षुओं और अन्य शास्त्रियों को इस कहानी को हटाते हुए देख सकता हूँ। मैं शास्त्रियों को इस कहानी को डालते हुए नहीं देख सकता; हालाँकि, मैं उन्हें इसे हटाते हुए देख सकता हूँ। इसलिए मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि यह कहानी वैध है। मुझे लगता है कि इसे वास्तव में एनआईवी की तरह ही रखा जाना चाहिए और वे जो पंक्तियाँ बता रहे हैं, उन्हें रखना चाहिए क्योंकि यह हमारी सर्वश्रेष्ठ पांडुलिपि में नहीं है, लेकिन इसे इसलिए रखा जाना चाहिए क्योंकि मुझे लगता है कि यह यीशु के बारे में एक वैध कहानी है। तो, यह व्यभिचारी महिला की कहानी है, "मैं भी तुम्हें दोषी नहीं ठहराता" और यह चारों ओर घूम गई। यह अलग-अलग पांडुलिपियों में अलग-अलग जगहों पर पाया जाता है, वास्तव में ल्यूक 21 में। तो यह व्यभिचारी महिला की कहानी है और वह पाठ्य भिन्नता जो उनके पास है।

अंधा आदमी, यह एक सुंदर कहानी है। यह आदमी जन्म से अंधा था, यीशु मिट्टी के बर्तन लेते हैं, उन्हें उसकी आँखों पर चिपकाते हैं और उसे सिलोम के तालाब में जाने के लिए कहते हैं, मंदिर की पहाड़ी से सिलोम के तालाब तक। यह शायद लगभग आधा मील नीचे की ओर भटकने वाली जगह थी, वह अंधा है और अपनी छड़ी को नीचे रखता है और सिलोम के तालाब में धोता है और फिर यीशु के पास वापस आता है, वह आदमी देख सकता है। फिर लोगों को उत्साहित होने के बजाय कि यह आदमी देख सकता है और यहाँ बड़ी विडंबना है। वह आदमी जो नहीं देख सकता था, अब देखता है और यीशु आते हैं और अंधा आदमी, अंततः यीशु पर विश्वास करने के लिए प्रेरित होता है। अंधा आदमी अब देख सकता है, लेकिन फरीसी जो देख सकते हैं, यीशु को अस्वीकार करने के कारण अंधे हो गए हैं। तो आपको अंधे आदमी के देखने और देखने वाले लोगों के न देखने

के बीच का खेल मिलता है। वैसे भी, तो जॉन के अध्याय 9 में अंधे आदमी, कीचड़ से सने अंधे आदमी की बहुत ही दिलचस्प कहानी है।

जी. चरित्र चित्रण: थॉमस [41:34-50:30]

E: संयुक्त GH; 41:34-57:46 जॉन में थॉमस

लेकिन मैं अब थॉमस पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ, जो कि संदेह करने वाला है। यह हमारा आखिरी चरित्र चित्रण होगा। मुझे यह बात परेशान करती है कि थॉमस को इतना नकारात्मक रूप से चित्रित किया गया है। जब भी मैं थॉमस शब्द कहता हूँ, तो आपके दिमाग में अगला शब्द क्या आता है? संदेह करने वाला थॉमस। मैं कुछ अन्य अंशों को देखना चाहता हूँ जहाँ थॉमस का उल्लेख किया गया है क्योंकि वह उस अंतिम अंश से पहले दो अन्य अंशों में आता है जहाँ वह संदेह करता है। मैं उसे देखना चाहता हूँ और मैं कहना चाहता हूँ कि मुझे लगता है कि उसे बुरा नाम मिला है। इसलिए, मैं सबसे पहले जॉन 14 को देखना चाहता हूँ और फिर मैं यीशु के प्रति थॉमस की प्रतिक्रिया को पढ़ना चाहता हूँ। यह अध्याय 14 है और मैं वहाँ पद एक से शुरू करूँगा। यह कहता है, "अपने दिलों को परेशान मत होने दो," यह यीशु बोल रहे हैं, "भगवान पर भरोसा रखो, मुझ पर भी भरोसा रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से कमरे हैं," पुराने किंग जेम्स में थोड़ा बेहतर है। यह कहता है, "मेरे पिता के घर में बहुत से घर हैं।" इसलिए लोग सोचते हैं कि "मेरे पिता के घर में बहुत से घर हैं, यह अच्छा है, हमें स्वर्ग में एक घर मिलेगा।" सही है, लेकिन वास्तव में यह अधिक सटीक अनुवाद है "क्योंकि मेरे पिता के घर में बहुत से घर हैं। यदि ऐसा न होता, तो मैं तुम्हें बता देता। मैं तुम्हारे लिए एक जगह तैयार करने जा रहा हूँ, और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए एक जगह तैयार करूँ, तो मैं वापस आकर तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा ताकि तुम भी जहाँ मैं हूँ वहाँ रहो।" यह एक सुंदर कथन है, यीशु वापस आ रहे हैं और हम जहाँ वे हैं वहाँ हो सकते हैं। "तुम उस जगह का रास्ता जानते हो जहाँ मैं जा रहा हूँ।"

अब समस्या क्या है? थॉमस ने उससे कहा, "प्रभु, हम नहीं जानते कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो हम रास्ता कैसे जान सकते हैं?" थॉमस जिज्ञासु है। जब वह कुछ नहीं समझ पाया तो यीशु ने कहा, "तुम सब रास्ता जानते हो।" थॉमस ने कहा, "एक मिनट रुको, प्रभु, हम नहीं जानते कि आप

कहाँ जा रहे हैं, तो हम रास्ता कैसे जान सकते हैं?" तब यीशु ने थॉमस को उत्तर दिया, "मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आ सकता।" यह पवित्रशास्त्र में सबसे अविश्वसनीय कथनों में से एक है, है न? "मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ।" थॉमस ने कहा, "हम रास्ता नहीं जानते।" यह कथन कैसे आया, "मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आ सकता।" वह कथन, यीशु का वह अविश्वसनीय कथन थॉमस के प्रश्न का उत्तर था। इसलिए थॉमस जिज्ञासु है और यीशु जवाब देते हैं, "मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ। मेरे बिना कोई भी पिता के पास नहीं पहुँच सकता। यदि तुम वास्तव में मुझे जानते, तो तुम मेरे पिता को भी जानते। अब से, तुम उसे जानते हो और उसे देखा है।" तो वह महान कथन, "मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ," थॉमस के प्रश्न के उत्तर के रूप में आता है। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ, "यह प्रश्न पूछने के लिए थॉमस का धन्यवाद।" यूहन्ना अध्याय 14 श्लोक 6, सभी शास्त्रों में सबसे महान कथनों में से एक। "मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ।"

अब थोड़ा पीछे चलते हैं। आइए जॉन 11 में वापस चलते हैं। यह लाज़र की कहानी है। लाज़र मर जाता है और आपको मरियम और मार्था और उसकी बहनें याद आती हैं। वे सभी परेशान हैं कि यीशु देर से आता है और इस तरह की सभी बातें। तो शिष्यों, एक बात जिसके बारे में हमने जॉन 11 में बात नहीं की, वह यह है कि शिष्य यीशु के साथ बेथनी जाने से डरते हैं। लाज़र बीमार है और मर रहा है; वह बेथनी में मरने वाला है। अब बेथनी कहाँ है? यरूशलेम यहाँ स्थित है; बेथनी जैतून के पहाड़ के पीछे स्थित है। तो मूल रूप से क्या होता है कि आप जेरिको से रेगिस्तान के माध्यम से ऊपर आते हैं और आप जैतून के पहाड़ पर चढ़ते हैं और यहीं बेथनी है। एक बार जब आप रिज को पार कर लेते हैं और यह केवल, हम बात कर रहे हैं दो सौ गज, तीन चार सौ गज। आप रिज को पार करते हैं और फिर आप सीधे नीचे आते हैं और वहाँ यरूशलेम है। जब आप जैतून के पहाड़ पर होते हैं, तो आप लगभग 2700 फीट ऊपर होते हैं। यहाँ नीचे यरुशलम लगभग तीन या चार सौ फीट नीचे है। तो मूल रूप से आप किद्रोन घाटी में नीचे आते हैं और फिर मंदिर के पहाड़ पर चढ़ते हैं। तो, यरूशलेम में मंदिर के पहाड़ का सबसे अच्छा दृश्य जैतून के पहाड़ से है क्योंकि जैतून का पहाड़ मंदिर के पहाड़ को देखता है।

इसलिए शिष्य बेथनी जाने से बहुत डरते हैं क्योंकि बेथनी यरूशलेम से पत्थर फेंकने की

दूरी पर स्थित है; हम यरूशलेम से आधा मील या एक मील की दूरी पर बात कर रहे हैं, और मंदिर से भी। पिछली बार जब यीशु यरूशलेम में थे, तो वे उन्हें मारने के लिए बाहर थे। और इसलिए शिष्यों ने कहा, "यीशु, लाजर, वह बेथनी में है, लेकिन यीशु, यीशु पिछली बार जब आप वहाँ गए थे, तो उन्होंने आपको मारने की कोशिश की थी। इसलिए चलो यहाँ यरूशलेम में इतनी जल्दी नहीं जाते।" इसलिए शिष्य यीशु के साथ ऊपर जाने से डरते हैं।

अब मैं चाहता हूँ कि आप थॉमस की बात सुनें। क्या यह थॉमस पर संदेह करने जैसा लगता है? अब थॉमस की प्रतिक्रिया यह है: "लेकिन रब्बी," उन्होंने कहा, 'अभी कुछ समय पहले यहूदियों ने आपको पत्थरवाह करने की कोशिश की थी, और फिर भी आप वहाँ वापस जाना चाहते हैं?' इसलिए उसने उनसे स्पष्ट रूप से कहा, 'लाज़र मर चुका है और तुम्हारे लिए मुझे खुशी है कि मैं वहाँ नहीं था ताकि तुम विश्वास करो।' [फिर से विश्वास पर जोर] 'मुझे खुशी है कि मैं वहाँ नहीं था ताकि तुम विश्वास करो। लेकिन चलो उसके पास चलते हैं।' शिष्य डर गए। पिछली बार वह लगभग मारा गया था। "तब थॉमस ने जो दिदुमुस ["जुड़वां"] कहलाता था, बाकी शिष्यों से कहा, 'आओ हम भी चलें, या हम भी चलें कि उसके साथ मर जाएँ' (यूहन्ना 11:16)। थॉमस पर संदेह करते हुए, इस आदमी में हिम्मत है। वह कहता है, "हाँ, यीशु वहाँ ऊपर जा रहा है। वह हमारा मित्र है; उसे वहाँ अकेले नहीं जाना चाहिए। हम उसके साथ जाएँगे। अगर वह वहाँ मरने वाला है, तो हम उसके साथ मरने वाले हैं। चलो लड़कों और चलो यीशु के साथ ऊपर चलते हैं।" यह साहसी थॉमस है। "हम ऊपर जाकर यीशु के साथ मरने वाले हैं।" वे डरे हुए थे। थॉमस ने साहस के साथ अपने डर पर काबू पाया और कहा, "हम उसके साथ मरने जा रहे हैं। अगर वह जाता है, तो हम भी जाते हैं।" यह थॉमस है।

तो आप समझ रहे हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ, थॉमस जिज्ञासु है। आप जानते हैं कि यीशु "हम रास्ता नहीं जानते।" "मैं ही रास्ता, सच्चाई और जीवन हूँ।" "यीशु, तुम वहाँ जाओगे और तुम मारे जाओगे यीशु; हम वहाँ नहीं जाना चाहते।" थॉमस कहता है, "अरे, चलो लड़कों; हम उसके साथ मरने जा रहे हैं। और यही हमारी भूमिका है।" और यह थॉमस है।

तो अब मैं जो सुझाव देना चाहता हूँ, वह यह है कि आइए हम यूहन्ना अध्याय 20 पद 24 में दिए गए अंश को देखें। थॉमस मिसौरी से है, मुझे बताओ कि किस तरह का व्यक्ति है। लेकिन,

उसने उनसे कहा, अब यह थॉमस है। थॉमस-- यीशु पुनरुत्थान के बाद शिष्यों के सामने प्रकट हुए। थॉमस वहाँ नहीं था। उसने यीशु को नहीं देखा, लेकिन उसने उनसे कहा, "जब तक मैं न देखूँ" यह यूहन्ना 20:24 और उसके बाद है। लेकिन उसने उनसे कहा, "जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के निशान न देख लूँ और कीलों के निशानों पर अपनी उंगलियाँ न डाल लूँ और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूँ मैं विश्वास नहीं करूँगा।" फिर से विश्वास की धारणा। थॉमस कहता है कि मैं पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं कर सकता। मुझे अपनी उँगली उसके हाथ के कीलों के निशानों में डालनी होगी। मुझे अपना हाथ उसके बाजू में डालना पड़ा, जहाँ भाला घुसा था। एक हफ्ते बाद, फिर यीशु प्रकट हुए, उन्होंने थॉमस के सामने अपने हाथ फैलाए, और उन्होंने कहा, "अपनी उँगली यहाँ रखो, मेरे हाथ देखो। अपना हाथ बढ़ाओ और इसे मेरे बाजू में डालो। संदेह करना बंद करो और विश्वास करो। संदेह करना बंद करो और विश्वास करो।" फिर से, यह विश्वास, विश्वास, विश्वास है। थॉमस कैसे विश्वास करता है? यीशु कहते हैं, "यहाँ, थॉमस, अपनी उँगलियाँ डालो। तुम मुझे दिखाने वाले व्यक्ति हो, अच्छा यह अच्छा है। मैं यीशु हूँ; मैं तुम्हें दिखाने जा रहा हूँ। ये मेरे हाथ हैं। मेरे हाथों पर अभी भी निशान हैं।"

क्या इसका मतलब यह है कि यीशु के हाथों पर क्रूस पर चढ़ने के निशान थे? यह उनका पुनर्जीवित शरीर है। क्या यीशु के शरीर पर अनंत काल तक क्रूस पर चढ़ने के निशान रहेंगे? जाहिर है, यह उनका पुनर्जीवित शरीर है। "थॉमस, अपनी उंगलियाँ यहाँ रखो, अपना हाथ मेरे पंजर में डालो। संदेह करना बंद करो और विश्वास करो।" तो संदेह और विश्वास के बीच यह तनाव है। यीशु ने उस बिंदु पर उसे फटकार लगाई। याद कीजिए कि हमारे पास साहसी और जिज्ञासु थॉमस कैसे थे? अपनी उंगलियाँ मेरे हाथों में रखने पर थॉमस की क्या प्रतिक्रिया थी? थॉमस ने उससे कहा, "मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर।" क्या प्रतिक्रिया थी! थॉमस ने यीशु को देखा, यीशु ने खुद को थॉमस को अर्पित करके उसे विश्वास करने के लिए प्रेरित किया और थॉमस ने निष्कर्ष निकाला, "मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर।" मसीह में ईश्वरत्व और वह कौन है, इसके लिए पूरे शास्त्र में इससे बेहतर कथन क्या हो सकता है: "मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर।"

एच. थॉमस पर व्यक्तिगत विचार [50:30-57:46]

मुझे लगता है कि मुझे थॉमस के साथ इस अंश की समझ मिली क्योंकि लगभग पाँच साल पहले मेरे पिता कैंसर से मर गए थे। उन्हें अग्राशय का कैंसर था और कैंसर ने उनके पेट को पूरी तरह खा लिया था। वह घर पर मरना चाहते थे, इसलिए वह अस्पताल नहीं जाना चाहते थे। वह वृद्धाश्रम में नहीं जाना चाहते थे, उस समय उनकी उम्र लगभग 74, 75 वर्ष थी। मैं छुट्टी पर था, इसलिए मुझे उनके जीवन के अंतिम 11 दिनों के लिए उनके साथ रहने के लिए घर जाना पड़ा। डॉक्टरों ने उन्हें बताया कि वह मरने वाले हैं और मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा, वह अपने पूरे जीवन में यीशु के आने का इंतजार कर रहे थे। वह लगभग हर दिन खिड़की पर जाते थे। मैं अपने पिता को हमेशा याद रख सकता हूँ, यीशु आज वापस आ रहे हैं। यीशु आज वापस आ सकते हैं और वह मसीह की वापसी की उम्मीद से देखते थे। मुझे याद है कि जब वह कैंसर से पीड़ित थे, तो उन्होंने मुझसे कहा था, "मुझे लगता है कि यीशु मेरे लिए वापस नहीं आ रहे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि मैं यीशु के साथ रहने जा रहा हूँ।" तो उन्होंने उस उम्मीद को पलट दिया। यह उसके लिए एक बड़ा मोड़ था और जैसे-जैसे कैंसर बढ़ता गया, और यह और भी बदतर होता गया, और यह वास्तव में बहुत भयानक होता गया। हॉस्पिस के लोग आए और हमें मॉर्फिन दिया। और हॉस्पिस के लोगों ने कहा--मैं नहीं जानता कि मैं आपको कैसे बताऊँ कि मेरे मन में उन लोगों के लिए कितना सम्मान है, वे अद्भुत थे, बिल्कुल अद्भुत। वह बहुत दर्द में था इसलिए हमें उसे मॉर्फिन देना पड़ा और यह बहुत बुरा था, बहुत बुरा। वह हमारे परिवार में किसी पर भी भरोसा नहीं करता था कि वह उसे मॉर्फिन देगा, सिवाय मेरे। यह ऐसा था, "पिताजी, मैं एक डॉक्टर हूँ, लेकिन मैं उस तरह का डॉक्टर नहीं हूँ।" लेकिन यह बस इतना था कि "नहीं, नहीं, टेड मुझे मॉर्फिन देगा।" वह जानता था कि यह बहुत गंभीर मामला था। इसलिए मैं ही वह व्यक्ति था जिसे मॉर्फिन देने के लिए नियुक्त किया गया था, भले ही मुझे नहीं पता था कि मैं क्या कर रहा था और यह एक रात में स्पष्ट हो गया जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा।

मेरे पिता के गुजर जाने के बाद, और वो ग्यारह दिन वाकई बहुत बुरे थे, और कुछ जगहों पर दर्द अविश्वसनीय था। उसके बाद करीब आठ महीने तक, मैं अपने पिता की मौत को अपने दिमाग से निकाल नहीं पाया। जब कोई व्यक्ति मर जाता है और उसे मुर्दाघर ले जाया जाता है और सब कुछ किया जाता है और आपके लिए किया जाता है और इस तरह की चीज़ें होती हैं, तो यह अलग

बात है, लेकिन इस मामले में ऐसा नहीं है। यह चौबीसों घंटे काम करने वाला दिन था, मेरी बहन और मेरी माँ और मैंने आखिरी दिनों में चौबीसों घंटे उनकी देखभाल की। यह बहुत बुरा था। जब मैं उन्हें दफ़नाने के बाद वहाँ से निकला, तो करीब आठ महीने तक हर रात मैं आधी रात को जाग जाता था और अपने पिता की मौत, दर्द और इस तरह की चीज़ों के बारे में सपने देखता था। मैं बस, मैं इसे अपने दिमाग से निकाल नहीं पाया। मैं सिर्फ़ उनकी मौत देख सकता था, मैं सिर्फ़ उन्हें मरते हुए देख सकता था और यह लगभग आठ महीने तक हर रात बार-बार होता रहा।

मुझे लगता है कि इससे मुझे थॉमस के बारे में कुछ समझ मिली। मुझे आश्चर्य है कि क्या थॉमस ने उस व्यक्ति को देखा जिसे वह प्यार करता था, क्रूस पर चढ़ते हुए, एक अत्यंत क्रूर मौत, क्रूस पर कीलों से ठोका गया, दम घुटने से वह सांस के लिए तड़प रहा था। और थॉमस ने उसे मरते हुए देखा और वह इसे अपने दिमाग से निकाल नहीं पाया और इसलिए यह ऐसा है जैसे शिष्यों ने उससे कहा, "थॉमस, थॉमस वह मृतकों में से जी उठा है।" और थॉमस कह रहा है, "मेरे साथ खिलवाड़ मत करो। मेरे साथ खिलवाड़ मत करो। मैंने उसे मरते देखा। मैंने उसे मरते देखा। ऐसा मत करो, यह मत कहो कि 'वह मृतकों में से जी उठा है।' यीशु मर चुका है। मैंने उसे मरते देखा।" वह मसीह की मृत्यु को भूल नहीं सकता क्योंकि उसने इसे देखा था और यह उसके अंदर इतनी गहराई से समाया हुआ था। मुझे याद है कि आठ महीने बाद, यह अगस्त का महीना था। अचानक एक दिन, अब आप कहने जा रहे हैं कि यह किसी ऐसे व्यक्ति से बहुत मूर्खतापूर्ण लगता है जिसने अपना सारा जीवन बाइबल पढ़ाया है। आप हर रविवार को कहते हैं, "मैं स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ, उनके इकलौते पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह..., मैं पुनरुत्थान में विश्वास करता हूँ।" अगस्त के मध्य में एक दिन अचानक मैं उठा और अचानक मुझे एहसास हुआ: पुनरुत्थान है। पुनरुत्थान है। हाँ, मेरे पिता की मृत्यु वास्तव में बहुत, बहुत, बहुत भयानक थी, लेकिन पुनरुत्थान है। *अनास्तासिस*, यीशु ने मर कर मृत्यु पर विजय प्राप्त की। यीशु ने स्वयं मर कर और मृतकों में से जी उठकर, हमें आशा देकर मृत्यु पर विजय प्राप्त की। मृत्यु विजेता नहीं है। मृत्यु हारने वाला है। मृत्यु सबसे बड़ी हारने वाली है। मृत्यु हारती है। यीशु ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की। पुनरुत्थान है। कैसे अचानक मुझे अपने जीवन के अधिकांश समय के लिए एहसास हुआ, आपसे ईमानदारी से कहूँ तो, मुझे नहीं पता कि अचानक, मृत्यु चली गई और पुनरुत्थान की आशा

मेरे जीवन की सबसे बड़ी चीजों में से एक थी।

मुझे आश्चर्य है कि क्या थॉमस मसीह की मृत्यु पर इतना केंद्रित था कि वह पुनरुत्थान तक नहीं पहुँच सका। यीशु प्रकट होते हैं, "अपनी उंगलियाँ यहाँ रखो थॉमस," और फिर थॉमस घोषणा करते हैं, "मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर।" इसलिए मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि थॉमस जैसे लोगों पर पत्थर फेंकने से सावधान रहें क्योंकि जब हम अपने प्रियजनों को मरते हुए देखते हैं तो ऐसा बहुत होता है। यह चीजों के बारे में आपके सोचने के पूरे तरीके को बदल देता है। यीशु ने पुनरुत्थान के माध्यम से मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। यीशु मृतकों में से जी उठे और इससे हमें आशा मिलती है। थॉमस ने कहा, "मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर," और यीशु ने उससे कहा, "क्योंकि तुमने मुझे देखा है, इसलिए तुमने विश्वास किया है। क्योंकि तुमने मुझे देखा है, इसलिए तुमने विश्वास किया है।" ध्यान दें कि थॉमस को विश्वास करने का क्या कारण है। विश्वास जॉन का बड़ा विषय है क्योंकि थॉमस ने देखा, उसने विश्वास किया। तब यीशु ने यह कहा, "क्योंकि तुमने मुझे देखा है, इसलिए तुमने विश्वास किया है। धन्य हैं वे जिन्होंने नहीं देखा और फिर भी विश्वास किया।" और आप एक बात जानते हैं, वे हम हैं। वे हम हैं। "धन्य हैं वे जिन्होंने नहीं देखा, और फिर भी विश्वास किया, " और यीशु हमें आशीर्वाद देते हैं। हमने नहीं देखा है, लेकिन हम विश्वास करते हैं और हम आशा करते हैं। पुनरुत्थान है, *अनास्तासिस*, पुनरुत्थान, *अनास्तासिस*। खड़े हो जाओ, वह पुनरुत्थान के लिए खड़ा हुआ और हम कल, ईस्टर और मानव जाति के लिए क्या महान आशा का जश्न मना रहे हैं। मृत्यु विजेता नहीं है, पुनरुत्थान है। यीशु ने घोषणा की है, उसके शिष्यों ने इसे देखा। पाँच सौ लोगों ने एक बार इसे देखा। पवित्रशास्त्र का संदेश इसकी घोषणा करता है। हम पुनरुत्थान की आशा के साथ उसके पुनरुत्थान में खड़े हैं। और फिर हम जिन्होंने उसे नहीं देखा है, मसीह से हमारे लिए एक आशीर्वाद है।

सुनने के लिए धन्यवाद, अब हमारे पास जॉन के बारे में कुछ मिनट और हैं, और फिर हमारा काम पूरा हो जाएगा।

जेसिका राबे द्वारा लिखित
बेन बोडेन द्वारा संपादित
टेड हिल्लेब्रांट द्वारा संपादित रफ

